

an>

Title: Regarding drought situation in Vidarbha and Marathwada regions of Maharashtra.

श्री राजीव सातव (हिंगोली) : अध्यक्ष महोदया, मैं महाराष्ट्र और खासतौर से अपने लोक सभा क्षेत्र का अहम मसला आपके सामने रखना चाहता हूँ। पिछले दो साल से महाराष्ट्र सूखे की मार झेल रहा है। इस साल जल संकट की स्थिति इतनी खरता हो गयी है कि पीने के लिए पानी भी महाराष्ट्र में, खासतौर से मराठवाडा और विदर्भ में नहीं मिल रहा है। इससे जनता और किसान पूरी तरह से बेहाल और मरणासन्न स्थिति में हैं। महाराष्ट्र के कुल 36 में से 21 जिलों में सूखा घोषित किया गया है, जिससे चार करोड़ लोग प्रभावित हुए हैं।

अध्यक्ष महोदया, मेरा आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह है कि आज बैवस भी किसान को अपने दरवाजे पर नहीं खड़ी कर रही, जिससे महाराष्ट्र आत्महत्या के मामले में पूरी तरह से शीर्ष स्थान पर पहुँच चुका है। सरकारी लाभ नहीं मिलने से महाराष्ट्र के किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हैं। वे आज अपनी मूल्यवान जमीन सूदखोरों को सस्ते दामों पर बेचने पर मजबूर हो गये हैं। कई सारे बच्चे, करीब 40 प्रतिशत की आबादी मराठवाडा और विदर्भ से आज शहर की तरफ कहीं न कहीं शिफ्ट हुई है। ... (व्यवधान) उनका पलायन हुआ है।

मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि महाराष्ट्र सरकार पिछले दो सालों से केन्द्र सरकार से जो राशि मांगी है, वह राशि आज तक महाराष्ट्र सरकार को नहीं मिली है। प्रधान मंत्री जी पिछले दो सालों में एक बार भी किसान का दुख देखने के लिए महाराष्ट्र विशेषतः मराठवाडा और विदर्भ में नहीं आये हैं। मेरी आपके माध्यम से सरकार से विनती है कि कर्ज मुक्ति की घोषणा तुरंत की जाए। माननीय प्रधानमंत्री कम से कम किसान का दर्द जानने के लिए मराठवाडा, विदर्भ में आएँ।

माननीय अध्यक्ष:

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे को श्री राजीव सातव द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।